अभिनव मधुशाला

<u>प्रस्ताव भाव</u>

दावा नहीं करता कवि किंचित्
सिर्फ मगन हो गाता है
'बच्चन की 'मधुशाला' पर रीझा
'अभिनव मधुशाला' लाता है।

जीवन का दर्शन करनेवाला
रचनाकार कहलाता है
विषम दुखी दग्ध हृदय को
आशा के नीर पिलाता है।

तुलसी का हर पत्ता है गुणी
कवि अभिमान नहीं कर पाता है
साज के साथ आवाज देने हेतु
'अभिनव मधुशाला' की डुग्गी बजाता है।

(1)

भाव का अभाव न हो
संकल्प जब मन में कर डाला
कोमल उदार मनोभावों से
हर श्वास में रची बसी हाला।

चाह कब किसी की पूरी होती
पर होगी पूर्ण काव्य प्रिया

यौवन पायेगी सनातन जीवन लहरी
खरी उतरेगी 'अभिनव मधुशाला'।

(2)

अनगिन वर्षों से कवि ने
अपने अन्दर संजोयी हाला
अमिय सुधा रस मिष्ट मधु
या फिर विष का हो प्याला

आज सुदिन है माँ श्वेता ने
जड़ता जिह्वा की तोड़ी है

अब सजाएगा हर दिन कवि
अपनों के संग मधुशाला।

वं शं

(3)
वज्रगृह की मोटी बेड़ी ने
बेधा देह बना अंतस् हाला
परतंत्रता की कसक से कवि ने
पी डाला प्याले पर प्याला

'ताज' की थी फिक्र किसे
'खाक' छानता चला आया

रंग पड़ गये सारे जब फीके
चमक उठी कवि की मधुशाला।

(4)
भाव केसर से हृदय गुफा में
रची ताजी शीतल सुगंधित हाला
निम्न भावों के विसर्जन से कवि ने
पकड़ा भाव भरा अमृत प्याला

ऐसी ही है फितरत कवि की
आज भी कवि है ऐसा ही

झर झर झर झर झहर झहर
झरती जाये कवि की मधुशाला।

(5)
चेतन पर्दे पर अवचेतन की
चिन्ता परत ने डेरा डाला
पर प्रवचन की तेजस्वी मालाओं ने
उष्ण कर दी कवि की हाला

दूर तक दिखे प्रभु ही प्रभु
ओंकार से सजने लगा हर पल

धैर्य, श्रद्धा और त्याग त्रयी से
है समन्वित कवि की मधुशाला।

(6)
कहाँ है प्याला कहाँ है साकी
और कहाँ मदिर हाला
कवि दृष्टि के चारों ओर है
उलझे विचार तंतुओं का जाला

सुध न रही तन की जब कुछ भी
कवि भाव–भूमि में जा लेटा है

फिर भी अच्छी है कवि की ही
प्यासे भावों की तीखी मधुशाला।

ॐ क्षं हं ॐ

सं ॐ षं

(7)

मन्दिर देखे मस्जिद देखे
तस्बीह देखी देखा माला
पर मिला न कहीं कवि को
परमात्म प्रेरक आनन्दमयी हाला

सारे पापी ऊँगली फेरें
एक दूजे पर आँख तरेरें

क्या करे आस कवि इनकी
अच्छी है कवि की निष्कलुष मधुशाला।

(8)

लगन लगी तो भुवन जलाकर
निकालेगा कवि मधु मदिर हाला
झूम–झूम कर नाच–नाच कर
पिलाएगा प्याले पर प्याला

जीवन की खट्टी–मीठी यादें
कवि कब ही भूल चुका

समर्पित करता हुलस आज कवि
जग पर 'स्व' की मधुशाला।

(9)

अंगूर लता से नहीं खींची
हृदय लहू से बनी हाला
आत्म भाव से सदा ही पूरित
है स्मार्त विलक्षण कवि का प्याला

ध्यान दिए जा, ध्यान पिए जा
आशीर्वाद ध्यानियों से लिए जा

खुद में उतर जब तू झूमे
नृत्य करे अहर्निश कवि की मधुशाला।

(10)

जब कभी भी छलका करती
लुभावन प्यालों की हाला
अमरावती से उतर अप्सरा
बारम्बार भर जाती प्याला

मूढ़मति कवि रहा खड़ा
मद की होती रही बारिश

घड़ी बाद जब मन संभला
थी सजी खड़ी कवि की मधुशाला।

(11)

मोल चुकाए कवि नित दिन
चाहे पी जाए जितनी हाला
सुरूर चढ़े न गुरूर बढ़े ना
खुद को कवि ने ऐसा ढ़ाला

ऐश्वर्य टीले पर है कवि बैठा
वंचितों में भी कवि ही लेटा

ऐक्य प्रचारक एक ही जग में
समता मूलक कवि की मधुशाला।

(12)

चाह जिसे थी उसे मिली ना
खोजा हर दर थी नहीं हाला
सूखे हलक ने पीने वाले को
प्रतिपल व्यग्र व्याकुल कर डाला

खाली प्याले को लेकर प्यासा
मदिरा की खोज लगा करने

किसी मोड़ पर मिल गया कवि
मिली उसे कवि की नूतन मधुशाला।

(13)

नाच नचाती है जग तब से
जब से व्यग्र हुआ पीने वाला
आस का सम्बल छोड़कर उसने
तोड़ा प्याला, छूटी हाला

वक्त का मलहम राहत देता
बूँद–बूँद ही भरता है घट

अन्तराल का फिक्र करे क्यों
फिर उमड़ेगी भावुक मधुशाला।

(14)

डलहौजी के फव्वारे सी
ऊँची उठती कवि की हाला
छूते ही देने वाला ठंढ़क
है करामाती कवि का प्याला

जग दाह से दग्ध जनों को
क्षण मात्र में पहुँचायेगा राहत

मुमुक्षु जनों का एक ही आश्रय
है कवि की विलक्षण मधुशाला।

(15)

पर्वत के उत्तुंग शिखर से
आमंत्रण कवि को देती हाला
मीलों चल कर पाया कवि ने
स्फटिक शिला का धवल प्याला

चिमटा, डमरू और त्रिशूल से
गर रीझ सके जीवन साकी

धन्य–धन्य हो जाए कवि
बन जाये संन्यस्त उसकी मधुशाला।

(16)

समिधा काष्ठ पड़ा है कुटी में
चकमक पत्थर बन जाये प्याला
जरूरत पड़ने पर लता वल्लरी
जला परोसेगा कवि खुद को हाला

स्वर्ग–नरक से हो परे उसने
आनन्द अमृत से खुद को सींच लिया

जीवन बेल पसरेगी निःशंक
होगी सृजित अभिनव मधुशाला।

(17)

कानी आँखों की सुषमा को
कवि ने बना डाला हाला
स्याह चेहरे में गढ़ सौन्दर्य
रच डाला अनोखा प्याला

लँगड़ाना जब भूल यात्री ने
दुर्गम पथ पर रखे पाँव

कोलाहल पसरा जग भर में
सृजित हुई अद्‌भूत मधुशाला।

(18)

मयखाने से दूर कवि रहता
फिर भी हाथों में प्याला
ओठों ने न चखी मदिरा
फिर भी कवि बातों में हाला

मदिर वातायन का कवि पक्षधर
मादकता क्षण–क्षण महसूस करे

अपनी धुन का है कवि पक्का
दृढ़ संकल्पित कवि की मधुशाला।

(19)

ब्रह्मरन्ध्र और मूलाधार को
जोड़ती सुषुम्ना की हाला
प्राणों के आयाम से बनता
सुमधुर शाश्वत जीवन प्याला

अखिल ब्रह्मांड विचरे कवि घन बन
ले हाथ में अखंड ओंकार दीया

सत्प्रवृत्ति का आजीवन प्रचारक
है कवि ही खुद की मधुशाला।

(20)

भ्रम और यथार्थ का द्वंद्व जब छूटे
खुद समक्ष प्रकट हो जाये हाला
विश्व फलक पर दिखे जनार्दन
हर छवि बने साकी बाला

मन हो जाये स्वस्थ
कुवृत्ति का मैल धुले

घंटियाँ गूँजें कर्ण गुहा में
आध्यात्मिक संघ है कवि की मधुशाला।

(21)

नदी–नाले, पर्वत और मरू
हर जगह मिलता प्याला
नीर क्षीर में बसी मादकता
बहती सतत रहे हाला

आम्र कुंज में कूके कोयल
जीवन का अंधेरा दूर करे

नयनों में बस जाये हरियाली
स्वस्थ बिहुँसे कवि की मधुशाला।

(22)

शाम देती हर रोज आमंत्रण
कोई आये कवि घर लेकर प्याला
दुनिया की हो न फिक्र जिसे
भावों की गट–गट पिये हाला

कलुष मद ईर्ष्या तज कर
जीवन धुन पर नृत्य करे

अपने को ही जब पाने निकले
पा धन्य हो निज मधुशाला।

(23)

कितना भी हो बड़ा आडम्बर
एकरस रहेगी कवि की हाला
चमक–दमक से विरूप न होगा
रत्ती भर कवि का प्याला

प्रभु डगर पर धरे जब पाँव
वाचालों का क्यों वह मान करे

आत्म समर्पित हो जीवन–मधु
आत्मरत रहे कवि की मधुशाला।

(24)

कभी ना भूले आदर्श धवल
छूटे ना कभी पौरूष हाला
खत्म कभी ना हो जिजीविषा
विश्वास का ना टूटे प्याला

साँस–साँस में बसे सच्चाई
दूसरों का ही मान रहे

सुवासित हो जग का हर घट
निडर हो छलके कवि की मधुशाला।

(25)

सदैव सत्य ही हो विजयी
कुत्सित भावों से न बने हाला
अन्धवृत्ति हो लुप्त जगत से
अजर–अमर रहे जीवन प्याला

दर्शन की बातों का घर्षण
बड़ा बुरा है यार मेरे

सामान्य जन बनकर सहज हो
आयेगी खुद सज–धज मधुशाला।

(26)

हाथ पसारे फिरता कल तक
आज दम्भ का पीता जाये हाला
दूसरों का अधिकार छीन बैठा
लेकर तम का गन्दा प्याला

अकड़ा ऐंठा है इस कदर
शाश्वत सत्य है भूल गया

सहजता से हो उपलब्ध उसे सत्य
होगी आनन्दित खुद मनहर मधुशाला

(27)
दुनियादारी की परवाह नहीं
समर्पित खुद को कवि ने कर डाला
आत्म सिन्धु में तैरे मीन बन
निर्बंध छके हर दम हाला

आत्मीय जनों की खोज करे क्यों
क्यों पड़े किसी के बलात् गले

अपनी धुन में मगन गाये कवि
संग कवि के उसकी अपनी मधुशाला।

(28)
सदा उपेक्षित रहा है जग में
खुद रही जिसकी आत्मीय हाला
दुनिया बेशक ठुकराये फिर भी
बिन गिने बेफिक्र पिये प्याला

घात–प्रतिघात और दाँव–पेंचों से
मन जिसका कभी न कुम्हलाये

तुफानों में खड़ा अड़िग जो
जीती उसने ही बली मधुशाला।

(29)
नहीं चाहिये सिकुड़े ठंढ़े भाव रज
चाहिये शीघ्र सुलगाने वाली हाला
माँस, मज्जे और मन को जा छेदे
तीखे नोकों वाला शातिर प्याला

रूखा हो कोई बात नहीं
मूल्यों को मगर जो पहचाने

दुआ सलाम की फिक्र किसे है
आत्म अभिमानी कवि की मधुशाला।

(30)
छुप बैठी ना जाने कहाँ साकी
खोजे भी मिला नहीं प्याला
साथ रही फिर भी संग कवि के
सुखकर नाज भरी सबरंग हाला

होठों से यूँ लगी मदमाती
हटना इसको याद नहीं

प्रतिरोध छोड़ा कवि ने अब
सेवक है कवि, मालिक है मधुशाला।

(31)

जिस हाला की चाह की कवि ने
नाजों से पर मिली वही हाला
जिस प्याले की माँग थी कवि की
मशक्कत से, पर मिला वही प्याला

साकी के पीछे था न कवि
फिर भी गले लगी साकी

असमंजस में डूबा खड़ा कवि
इतनी मनोरम कैसे उसकी मधुशाला।

(32)

ऊँचे टीलों से झाँका कवि ने
बह रही थी नीचे हाला
कहीं नहीं मदिरालय साकी
और कहीं न खाली प्याला

लोग चुल्लू भर–भर थे पीते
आत्म जगत में डूबे खड़े

कुशलता पूछे बन भावुक कवि
रास आयी कवि को सहज मधुशाला।

(33)

विसर्जन करे सारा तम–कलुष
पीकर अमरता का स्व–प्याला
स्थिरता को उपलब्ध मुमुक्षु
पाये अशेष जीवनदात्री हाला

यथार्थ रंगों में है ढ़ली
मस्त कुटी कवि की प्यारे

बिन सोचे बन गयी देखो
स्वर्णिम सुघड़ कवि की मधुशाला।

(34)

कामनाओं का हो समर्पण
अंक लगेगी प्रसन्न साकी बाला
मोह रहित हो ध्यान में डूबे
उतरेगी गले सबकी हाला

विश्व में समदर्शन का प्रण हो
आये 'खुदी' खुद ही चलकर

घृणा क्रोध कोई भूले जिस क्षण
मिलेगी उसे नयी–नवेली मधुशाला।

(35)

रंग न बदले फिर भी चपल
है मादक चंचल मस्त हाला
कभी ना टूटे ना कभी फूटे
करामाती है कवि का प्याला

दे रही देखो खुला निमंत्रण
नित्य षोडशी साकी कवि की

खिली रहे हरदम तरूणाई
है समर्पित कवि की मधुशाला।

(36)

जीना है तो पीना होगा
कैसा भी बन पड़े हाला
न रहे प्याला, रहे ना साकी
लग जाये मुखों पर ताला

अपने भड़कें सीना तानें
कभी ना मानें तूझे अपना

ईमान अगर फिर भी न छोड़े
मिलेगी ताजी हर वक्त मधुशाला।

(37)

भाग्य भरोसे बैठा है जो
पायेगा नहीं कवि की हाला
उत्सुक उद्यमी उत्साही जन को
मिलेगा मस्ती भरा प्याला

रोग–शोक दुर्दिन का क्या दिन
यम के सीने पर पाँव रखे

जब तक बाँहों में संचित बल
अविजित रहेगी गर्वीली मधुशाला।

(38)

कल तक था प्रीतिकर सुहावन
आज क्यों अरूचिकर प्याला
आनन्द मनाया वर्षों संग जिसके
कष्टकारक आज वही हाला

जिस प्याले की चाह सदा थी
आज रह गया अनछुआ

हाय प्यारे हुआ आज क्या
सुहाया नहीं क्यों कवि को मधुशाला।

(39)

दुनियादारी में भूला था कवि
थी बँटती रही भीतर हाला
मुँछें ऐंठे अकड़ में अपनी
तोड़ा नक्काशीदार सजीला प्याला

ध्यान जगत के अनन्त रूपों ने
कवि को हद तक अभिभूत किया

भाव भूमि पर टिक कर कवि ने
पायी अनोखी नूतन मधुशाला।

(40)

सन्नाटों की मधुर गूँज को
कवि ने अपने अन्दर पाला
एकान्तिक कलरव से उपजी
श्रवण इन्द्रिय में बसी हाला

मधुर घंटियों की आवाज गूँजे
कवि ब्रह्म का नित्य करे दर्शन

घूँट–घूँट पीता जाये कवि अब
मृदुल बने मनोहर कवि की मधुशाला।

(41)

मादक मस्त मधुर धुनों से
प्यासे कानों ने रची हाला
अधीर मन ने हरि सेवा से
फटे कर्म वस्त्रों को सी डाला

उच्च भावों से होकर समज्जित
कवि शिखर पर जा बैठा

ब्रह्मांड के अणु–अणु में
बिखरी पसरी कवि की मधुशाला।

(42)

कानों के लौ को चूमे जब
छोटी नटखट भोली बाला
आत्म रस झरे अन्तस् से निरन्तर
सदा विभोर करे आत्मिक हाला

प्रेम भाव से भरकर दादी ने
पोती के सिर पर हाथ धरे

अध्यात्म शिखर पर जा पहुँचा कवि
अद्भूत है कवि की पारमार्थिक मधुशाला।

(43)

माँ श्वेता का रंग श्वेत है
उजली है कवि की भी हाला
न केसर है और न चन्दन
स्व प्रतिभा का चूरा डाला

सतत ध्यान का पक्षधर है कवि
संसार का निरपेक्ष निर्वाह करे

कवि है एक प्रखर चिन्तक
चिन्तन ही कवि की मधुशाला।

(44)

हर भवन में डेरा कवि का
कवि हर घड़ी पीने वाला
गाँव–गाँव में मजलिस कवि की
और संग कवि के अशेष हाला

डेग–डेग पर प्रशंसक कवि के
नित प्रेम पुष्प बिछा जायें

सब ओर बहाए प्रेम नीर कवि
है कवि प्रेमी यह मधुशाला।

(45)

संसार व्याधि से ग्रस्त पथिक ने
विश्वास तम्बू में डेरा डाला
हिम्मत–नींबू निचोड़ कवि ने
अश्रु नमक संग बढ़ाया प्याला

सत्य पौधे से खींच कवि ने
धैर्य संकल्प की बनायी मदिरा

थके पथिक ने पिया क्षण भर में
बनी बेहतर कवि की मधुशाला।

(46)

चूमेगी सोत्सुक हर मुख को
जीवन देने वाली मीठी हाला
हर हाथ में जा पहुँचेगा
कवि साकी का सजा प्याला

जग भूलेगा हर रस तत्क्षण
कवि मदिरा की याद रहे बाकी

अखिल विश्व पर राज करेगी
अनुपम सलोनी कवि की मधुशाला।

(47)

जो दिया जग ने आत्मसात कर
श्रम रस से बनायी ताजी हाला
विरोधी नहीं जग में कोई
सर्वसुलभ है कवि का प्याला

घर–घर में कवि की ही चर्चा
अलबेला है यह मधु दाता

प्रतिदान कभी किसी से ना माँगे
सुवासित हर पल कवि की मधुशाला।

(48)

दूषित भावों के पक्षधरों को
नहीं मिलेगी स्वच्छ कवि हाला
छली, पाखंडी, धूर्त्त जनों के
मुख से दूर कवि प्याला

लेने की अपेक्षा सीखे जो देना
मुसीबत में सिर्फ वही काम आये

संग उसी का चाहे निरन्तर
उदार, सुकोमल कवि की मधुशाला।

(49)

पवित्र भावों के पुष्प गुच्छों से
रची सुगन्धित मधुर हाला
शिश्न–उदर के मकड़ जाल से
मुक्त सिर्फ कवि का प्याला

उर्ध्व गति हो, श्वास हो शीतल
सद्भाव सदा कवि करे धारण

पल–प्रतिपल चढ़ता जाए कवि
संग चढ़े कवि की मधुशाला।

(50)

स्मृतियों के ढ़ेर पर बैठा कवि
मंद गति से पीए अतीत हाला
रंगीन ख्यालों ने जब रूप धरे
हुई प्रकट सजी साकी बाला

दृढ़ संकल्प से भर भुजबल
विश्वास स्तम्भ गाड़ा कवि ने

वर्त्तमान में है ही अविजित कवि
भविष्य विजेता कवि की ही मधुशाला।

(51)

एकरस होने की तमन्ना ने
लगा दी होठों से हाला
परायापन भूलने को कवि ने
छका सबों का ले प्याला

एक नयी यात्रा पर चला कवि
दो थोड़ी विश्राम उसे

फिर आएगा ले जीवन साकी
और नयी एक मधुशाला ।

✎ रोहिनी पति सिंह 'व्योमेश'